हमारे अगुवों की ओर से सन्देश

डीकन: पिता के घर के सेवक

मेनोनाइट वर्ल्ड कॉंफ्रेंस सदस्य कलीसिया पेरसातुआन गेरेजा–गेरेजा क्रिस्टेन मुरिया इण्डोनेशिया (जीकेएमआई) इन इण्डोनेशिया 2017 में एक प्रतिनिधि सभा में एक दूसरे के पैर धो रहे हैं। फोटो: लिसा अंगर

विज्ञप्ति जारी करने की तारीख: बुधवार18 अक्टूबर, 2017

एक हृदय के कक्षों के समान, एमडब्लयूसी के चार कमीशन ऐनाबैपटिस्ट सम्बन्धित कलीसियाओं के वैश्विक समुदाय की सेवा चार क्षेत्रों में करते हैं: डीकन, फेथ एण्ड लाइफ, पीस, मिशन। इन कमीशनों द्वारा जनरल कॉउंसिल के विचार विमर्श के लिए विषय तैयार किए जाते हैं, सदस्य कलीसियाओं को मार्गदर्शन और संसाधनों का प्रबन्ध किया जाता है, और सामान्य हितों और लक्ष्यों के मामलों में एमडब्लयूसी से सम्बन्धित नेटवर्कों (तंत्रों) या सहभागिताओं को एक साथ मिलकर कार्य करने के लिए बढ़ावा दिया जाता है। निम्नलिखित लेख में अपनी सेवकाई के प्रकाश में एक संदेश प्रस्तुत किया है।

जब हम यह विचार करते हैं कि एक सेवक या डीकन का कार्य क्या होता है, तब हम पवित्रशास्त्र के किस भाग की ओर देखते हैं? अक्सर हम प्रेरित 6:1–6 को पढ़ते हैं, यद्यपि इस पाठ में ''डीकन'' या ''सेवक'' (*डियाकोनोस*) शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है। इस स्थल में, समुदाय द्वारा अपने बीच के ऐसे लोगों की सुधि ली जाती है जो जरूरतमंद हो, और जैसे जैसे कलीसिया बढ़ती जाती है वैसे वैसे आवश्यकता भी बढ़ती जाती है। समुदाय द्वारा कुछ पुरुषों को नियुक्त किया जाता था कि वे भोजन के दैनिक वितरण की व्यवस्था करें। ये पुरुष – डीकन – लोगों की आवश्यकताओं को सुनते थे और समुदाय के सहयोग से उन्हें पूरा करते थे।

क्या डीकन के कार्य का सार यही है?

इस स्थल में, मैं दो बिन्दुओं पर आ कर ठहर जाता हूँ जो डीकन के कार्य के प्रति हमारी समझ को प्रभावित करते हैं।

सबसे पहले, इस स्थल में, प्रेरितों द्वारा यह तर्क दिया जा रहा है: ''यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़ कर खिलाने पिलाने की सेवा में रहें'' (प्रेरित 6:2)।

क्या यहाँ पर हमें ऐसा लग रहा है कि जरूरतमंदों की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने से अधिक महत्वपूर्ण प्रचार या उपदेश

की सेवा है? ऐसा लगता है कि इस स्थल में यह दोहरा रवैया पाया जाता है जो मानवीय सेवा को सुसमाचार प्रचार से अलग करके देखता है। इस प्रकार का विभाजन डीकन के कार्य में आत्मिक पहलुओं को देखने से हमारे सामने पर्दा ला सकता है। वचन की सेवा, प्रार्थना, और प्रचार, या प्रार्थना और प्रचार डीकन के कार्य का आत्मिक पहलू है।

दूसरी बात, प्रेरितों के काम में, डीकनों का कार्य समुदाय की आवश्यकता के अनुरूप निर्धारित किया जाता था।

ऐसा लगता है कि डीकन का कार्य तभी पूरा होता है जब आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है। यह निश्चय ही अत्यंत आवश्यक है कि डीकन जरूरतमंदों की पुकार को सुनें और उनका उत्तर देने के लिए उपाय ढूंढ़े। परन्तु अक्सर, जब मैं स्थानीय मण्डलियों में डीकनों को सुनता हूँ, तो मैं ऐसा महसूस करता हूँ कि वे अपेक्षाओं के भार से दबे हुए हैं और ऐसा महसूस करते हैं कि वे उन कार्यों को पूरा नहीं कर पा रहे हैं जो उनसे अपक्षित है।

जब हम अपने कमीशन में अपने अनुभवों को बाँटते हैं, तो कुछ लोग पूरी नहीं की जा सकी अपेक्षाओं के बारे में बताते हैं। विश्व भर की कलीसियाओं की आवश्यकताएं अन्तहीन हैं। यह निर्णय लेना कठिन हैं कि किन आवश्यकताओं को पहले पूरा करना है। आप यह कैसे जान सकते हैं कि कौन सी आवश्यकता आपातकालीन है?

परन्तु कुछ और भी आवाजे हैं: जब डीकन कमीशन के सदस्य इन आवश्यकताओं को पूरी करने को जाते हैं, तो अक्सर वे भी आशीष पाते हैं। समुदाय की ओर से उन्हें अनापेक्षित भेंट दी जाती है। कुछ तो होता है जो देनेवाले और लेनेवाले के बीच के ऊँच नीच के अन्तर को तोड़ देता है।

इसलिए एक बार फिर से: हम एक डीकन के कार्य की दिशा किस ओर देखते हैं?

हमारे कमीशन के लिए, यीशु द्वारा अपने चेलों के पाँव धोना (यूह 13:1–20) एक डीकन का एक अधिक बहुअयामी चित्र प्रस्तुत करता है।

यीशु ने घर के गुलाम के कार्य को किया। इन सेवकों को असानी से अनदेखा कर दिया जाता है क्योंकि सामान्यतः वे उन प्रमुख चरित्रों में शामिल नहीं होते जो कार्य को आगे बढ़ाते हों। यीशु ने इस बात का इंकार नहीं किया कि वह प्रभु और शिक्षक है, परन्तु वह घर के एक गुलाम के रूप में प्रभु और शिक्षक है। वह पिता के घर के मेहमान जान कर चेलों की आवश्यकता में उनकी सेवा करता है। वह पिता के घर की विशेषता के अनुरूप अपनी पहचान धारण करता है।

यीशु ने इस बात का नमूना प्रस्तुत किया कि मेहमानों के साथ क्या करने आवश्यकता है, यह नहीं कि मेहमान के अनुसार उनकी आवश्यकताएं क्या है। जब यीशु ने उनके पाँव धोए, तो दोनों ही उस सबसे गहरी हरकत का हिस्सा बने जो ''पिता के पास (घर)'': यीशु अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता था (यूह. 13:1) को परिभाषित करता है।

इसलिए, डीकन वचन की सेवा करने वाले हर एक सेवक की भूमिका है। यदि आप एक डीकन नहीं हैं तो आप वचन का प्रचार नहीं कर सकते। आप सच्चाई से कलीसिया की सेवा नहीं कर सकते, आप मेलमिलाप, शान्ति, और न्याय की सेवा नहीं करते यदि आप डीकन नहीं हैं।

इसलिए हाँ, एक डीकन का यह कर्तव्य है कि वह समुदाय के जरूरतमंद व्यक्ति के साथ खड़ा हो, यह जानते हुए कि हमें उनकी आवश्यकता शायद इससे भी अधिक है जितना कि उनकी आवश्यकता जिसकी हम पूर्ति करते हैं। ऐसा करते हुए हम दोनों ही पिता के घर के जीवन में सहभागी बनते हैं।

जब हमने इस स्थल पर मनन किया, हमारे कमीशन को समझ में आया कि जो लोग अपनी आवश्यकता को सामने लाने अपनी आवाज नहीं उठाते उनकी आवाजों को सुनना कठिन है। हम इस बात को कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि हम सिर्फ उन्हीं की पुकार को सुनकर किसी निष्कर्ष तक न पहुँचे जिनकी पुकार सबसे ऊँची हो या जिनकी आवाजों को मीडिया द्वारा सबसे जरूरतमंद आवाज बताया जाता हो? हम ऐसे लोगों को कैसे देख सकते हैं जो आसानी से अनदेखा कर दिये जाते हैं?

निश्चय ही हम अपने अन्धेपन पर विजय पाने के लिए पवित्र आत्मा पर निर्भर रहते हैं।

– मेनोनाइट वर्ल्ड कॉंफ्रेंस के डीकन कमीशन के सदस्य जर्ग ब्रेकर द्वारा जारी विज्ञप्ति। वे कोन्फरेंज़ डेर मेनोनिटेन डेर स्वेएज़ (अलतउफर), कॉंफ्रेंस मेनोनाइट्स उसे (ऐनाबैपटिज) के महासचिव हैं।